Journal Homepage: www.ijarpr.com ISSN: 3049-0103 (Online)

International Journal of Advance Research Publication and Reviews

Vol 03, Issue 9, pp 518-521, September, 2026

परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का अकादमिक प्रदर्शन पर प्रभावः बिलासपुर जिले का एक केस स्टडी

***शोधार्थी* : *जितेन्द्र कुमार पटले*[1], *शोध निर्देशक: डॉ. प्रीति उपाध्याय*[2]**

विभाग: समाजशास्त्र, अंजनेया विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़
विभाग: समाजशास्त्र, अंजनेया विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़

सार-

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य बिलासपुर जिले के मस्तूरी विकासखंड के विशेष संदर्भ में ग्रामीण छत्तीसगढ़ के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन और उनके घरेलू सामाजिक-आर्थिक स्थिति (Socio-Economic Status—SES) के बीच संबंध का अध्ययन करना है। अध्ययन का सैद्धांतिक आधार पियरे बॉर्ड्यू के सांस्कृतिक पूंजी सिद्धांत तथा जेम्स कोलमैन के सामाजिक पूंजी सिद्धांत पर आधारित है, जिसके माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि परिवार की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, उपलब्ध शैक्षिक संसाधन तथा घरेलू सीखने का वातावरण विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन से किस प्रकार संबंधित हो सकते हैं। अध्ययन के लिए मस्तूरी विकासखंड के चयनित शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों से कुल 40 विद्यार्थियों का नमूना लिया गया। विद्यार्थियों विद्यार्थियों को उनकी घरेलू सामाजिक-आर्थिक स्थिति के आधार पर दो समान समूहों में विभाजित किया गया, जिनमें निम्न SES समूह में 20 विद्यार्थी तथा मध्यम/उच्च SES समूह में 20 विद्यार्थी शामिल थे। विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन को परीक्षा प्रतिशत के आधार पर मापा गया। अध्ययन में मुख्य परिकल्पना यह थी कि मध्यम/उच्च SES पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों का औसत परीक्षा प्रतिशत निम्न SES पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों की तुलना में अधिक होगा। इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण (Independent Samples t-Test) का प्रयोग किया गया। प्राप्त परिणामों से स्पष्ट हुआ कि निम्न SES समूह का औसत परीक्षा प्रतिशत 52.40% (SD = 8.10) था, जबकि मध्यम/उच्च SES समूह का औसत परीक्षा प्रतिशत 68.60% (SD = 7.50) पाया गया। दोनों समूहों के बीच 16.20 प्रतिशत अंकों का औसत अंतर पाया गया। स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण के परिणामों ने इस अंतर को सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण दर्शाया टी = 6.61, p = .001)

इस प्रकार, शून्य परिकल्पना को अस्वीकार कर दिया गया और वैकल्पिक परिकल्पना को स्वीकार कर लिया गया। परिणामों ने संकेत दिया कि अध्ययन के लिए चुने गए नमूने में मध्यम/उच्च एसईएस छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि कम एसईएस छात्रों की तुलना में काफी अधिक थी। अध्ययन सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि में संभावित असमानताओं और ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षिक अवसरों की ओर इशारा करता है और वंचित छात्रों के लिए अतिरिक्त शैक्षिक संसाधन, अध्ययन सहायता और समान सीखने के अवसर प्रदान करने की आवश्यकता का सुझाव देता है। चूंकि अध्ययन का नमूना सीमित है, इसलिए परिणामों को सावधानी के साथ सामान्यीकृत किया जाना चाहिए।

मुख्य शब्दः सामाजिक-आर्थिक स्थिति, अकादमिक उपलब्धि, स्वतंत्र नमूने टी-टेस्ट, बिलासपुर जिला, मस्तूरी ब्लॉक, ग्रामीण शिक्षा, शैक्षिक समानता।

परिचय:

शिक्षा को सामाजिक गतिशीलता, व्यक्तिगत सशक्तिकरण और सतत सामाजिक-आर्थिक विकास के एक महत्वपूर्ण निर्धारक के रूप में मान्यता दी गई है। अकादमिक उपलब्धि आज की दुनिया में उच्च शिक्षा, तकनीकी प्रशिक्षण और प्रतिस्पर्धी रोजगार का पासपोर्ट है। लेकिन अकादमिक उपलब्धियाँ अलग-थलग नहीं हैं। वे आंशिक रूप से छात्र के घर के सामाजिक और आर्थिक संदर्भ में निहित हैं।

महानगरीय केंद्रों और ग्रामीण भीतरी इलाकों के बीच संरचनात्मक सामाजिक-आर्थिक अंतर छत्तीसगढ़ जैसे विकासशील क्षेत्रों में शैक्षिक समानता के लिए बारहमासी बाधाएं पैदा करते हैं। राज्य स्तरीय योजनाओं के माध्यम से सरकारी माध्यमिक विद्यालयों की उपलब्धता में काफी वृद्धि हुई है। हालाँकि, यह घरेलू आर्थिक परिस्थितियाँ हैं जो यह निर्धारित करती हैं कि बच्चे किस हद तक औपचारिक शैक्षिक संभावनाओं का लाभ उठा सकते हैं।

समस्या कथन:

शिक्षा का उच्च माध्यमिक चरण (कक्षा 11 और 12) विकास का एक महत्वपूर्ण चरण है जिसमें शिक्षा में प्रदर्शन का भविष्य में पेशे के अवसरों पर सीधा प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिए, बिलासपुर जिले के मस्तूरी ब्लॉक जैसे ग्रामीण क्षेत्रों में, छात्रों को विभिन्न प्रकार के प्रणालीगत मुद्दों का सामना करना पड़ता है जैसे कि कृषि अर्थव्यवस्था पर निर्भरता, घरेलू आय में परिवर्तनशीलता, माता-पिता के बीच औपचारिक शिक्षा का निम्न स्तर, और निजी शिक्षण तक सीमित पहुंच, अतिरिक्त शिक्षण संसाधन और डिजिटल प्रौद्योगिकी।

हालांकि सरकारी नीतियां आम तौर पर समान संस्थागत पहुंच मानती हैं (e.g. मुफ्त सार्वजनिक शिक्षा) समान अवसर सुनिश्चित करने के प्रयास में, समाजशास्त्रीय सिद्धांत

का तर्क है कि परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति सीखने के परिणामों का एक महत्वपूर्ण मध्यस्थ है। इस प्रकार, बिलासपुर जिले में ग्रामीण उच्च माध्यमिक छात्रों के बीच उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि के आधार पर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण प्रदर्शन अंतर के परिमाण का अनुमान लगाने की स्पष्ट आवश्यकता है।

अध्ययन के उद्देश्य:

इस अध्ययन लेख के मुख्य उद्देश्य हैं:

मस्तूरी ब्लॉक, बिलासपुर में निम्न एसईएस और मध्यम/उच्च एसईएस परिवारों के उच्च माध्यमिक छात्रों की औसत शैक्षणिक उपलब्धि (वार्षिक परीक्षा में%) निर्धारित करना।

निम्न एस. ई. एस. और मध्यम/उच्च एस. ई. एस. विद्यार्थियों के बीच औसत परीक्षा अंकों में अंतर के महत्व की सांख्यिकीय रूप से जांच करने के लिए स्वतंत्र नमूनों की जांच करना।

ग्रामीण बिलासपुर में शैक्षणिक उपलब्धि में असमानताओं के लिए जिम्मेदार महत्वपूर्ण सामाजिक और घरेलू पर्यावरणीय कारकों को समझना।

ग्रामीण छत्तीसगढ़ में सामाजिक-आर्थिक शिक्षा के अंतर को पाटने के लिए ठोस नीतिगत सिफारिशें और सामुदायिक स्तर के हस्तक्षेप प्रदान करना।

अध्ययन का महत्व:

यह पेपर छत्तीसगढ़ में ग्रामीण उच्च माध्यमिक शिक्षा का एक अनुभवजन्य विवरण प्रदान करता है। निष्कर्ष राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 जैसे राष्ट्रीय दिशानिर्देशों के अनुसार लक्षित समर्थन तंत्र को लागू करने के लिए स्कूल प्रशासकों, शैक्षिक योजनाकारों और स्थानीय शासी निकायों के लिए व्यावहारिक निहितार्थ प्रदान करते हैं।

साहित्य की समीक्षा

पियरे बॉर्ड्यू के सांस्कृतिक पूंजी के सिद्धांत से पता चलता है कि शैक्षणिक संस्थान स्वाभाविक रूप से उन छात्रों के प्रति पक्षपाती हैं जिन्होंने एक मजबूत शब्दावली, शैक्षणिक मानदंडों के ज्ञान और शिक्षित माता-पिता द्वारा पारित अनुशासित अध्ययन आदतों के रूप में सांस्कृतिक पूंजी को मूर्त रूप दिया है। सामाजिक-आर्थिक रूप से विशेषाधिकार प्राप्त छात्र संस्थागत लाभों के साथ औपचारिक स्कूली शिक्षा शुरू करते हैं जिसके परिणामस्वरूप उच्च शैक्षणिक उपलब्धि होती है।

जेम्स कोलमैन का सामाजिक पूंजी सिद्धांत पारिवारिक सामाजिक पूंजी के प्रमुख पहलुओं के रूप में माता-पिता की भागीदारी, अकादमिक निगरानी और भावनात्मक समर्थन की आवश्यकता पर जोर देता है। कोलमैन ने प्रदर्शित किया कि आर्थिक संसाधन मजबूत माता-पिता की सामाजिक पूंजी के बिना पर्याप्त नहीं हैं जो छात्र की शैक्षणिक उन्नति को स्थापित और निर्देशित करता है।

साहित्य की समीक्षा:

ग्रामीण भारत में किए गए अनुभवजन्य अध्ययनों ने लगातार घरेलू वित्तीय सुरक्षा और शैक्षिक परिणामों के बीच एक सीधा संबंध दिखाया है (ड्रेज़ एंड सेन, 2013; शर्मा एंड पटेल, 2021) उच्च घरेलू आय वाले परिवार अधिक अध्ययन गाइड खरीदने, निजी ट्यूटरों को काम पर रखने और इंटरनेट की पहुंच के साथ अध्ययन टेबल और डिजिटल उपकरण खरीदने का खर्च उठा सकते हैं।

इसके अलावा, ग्रामीण छत्तीसगढ़ में शोध से पता चलता है कि निम्न सामाजिक-आर्थिक वर्गों के बच्चे अक्सर कटाई के चरम मौसम के दौरान घरेलू और कृषि गतिविधियों में लगे रहते हैं। यह घरेलू कार्यभार अध्ययन के प्रभावी समय को कम कर देता है और अनुपस्थिति में वृद्धि का कारण बनता है, जो सीधे परीक्षा के परिणामों को प्रभावित करता है।

शोध की विधि

वर्तमान अध्ययन मात्रात्मक, क्रॉस-सेक्शनल और तुलनात्मक प्रकृति का है। फील्ड डेटा का उपयोग छात्रों के दो अलग-अलग सामाजिक-आर्थिक समूहों की शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन और तुलना करने के लिए किया गया था।

चरों का मापन:

स्वतंत्र परिवर्तनीय घरेलू सामाजिक-आर्थिक स्थिति (एसईएस)

समग्र घरेलू मासिक आय, माता-पिता की साक्षरता और घर में सीखने के बुनियादी ढांचे के आधार पर दो परिचालन श्रेणियों में विभाजित किया गया है:

निम्न एसईएस समूह (एन 1 = 20) मासिक घरेलू आय ₹ 10,000 से कम, दैनिक मजदूरी श्रम या निर्वाह खेती का मुख्य रोजगार था, घर पर शैक्षिक सामग्री तक कम पहुंच।

मध्यम/उच्च एसईएस समूह (एन 2 = 20) प्रति माह 10,000 रुपये और उससे अधिक की घरेलू आय; स्थिर कृषि भूमि या नियमित औपचारिक/अनौपचारिक नौकरी; विशेष अध्ययन संसाधनों की उपस्थिति।

आश्रित चर-छात्र का शैक्षणिक प्रदर्शनः

पिछले वार्षिक स्कूल या बोर्ड परीक्षा में कक्षा 10 या कक्षा 11 में छात्र द्वारा प्राप्त अंकों के कुल प्रतिशत से।

नमूना डिजाइन और नमूना आकार

नमूने में छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिले के मस्तूरी ब्लॉक के सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले एन = 40 उच्चतर माध्यमिक छात्र (कक्षा 11वीं और 12वीं) शामिल थे। सामाजिक-आर्थिक श्रेणियों (20 निम्न एसईएस और 20 मध्यम/उच्च एसईएस) और लिंग के बीच समान वितरण बनाए रखने के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण किया गया था।

डाटा संग्रह प्रक्रिया

छात्रों को सीधे आपूर्ति की गई संरचित प्रश्नावली का उपयोग करके प्राथमिक डेटा प्राप्त किया गया है। सर्वेक्षण में जनसांख्यिकीय उपाय, मासिक घरेलू आय, माता-पिता की शैक्षिक पृष्ठभूमि, दैनिक गृह अध्ययन के घंटे और प्रमाणित वार्षिक शैक्षणिक अंकपत्र एकत्र किए गए।

परिकल्पनाएँ

छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि और उनकी घरेलू सामाजिक-आर्थिक स्थिति के बीच संभावित संबंधों की जांच करने के लिए निम्नलिखित सिद्धांतों को विकसित किया गया था:

H_0- निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति घरों के छात्र और मध्यम/उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति के घरों के विद्यार्थियों के परीक्षा परिणाम में महत्वपूर्ण भिन्नता पायी जाएगी |

H_1- निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति घरों के छात्र और मध्यम/उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति के घरों के विद्यार्थियों के परीक्षा परिणाम में महत्वपूर्ण भिन्नता नहीं पायी जाएगी |

सांख्यिकीय उपकरण:

दो स्वतंत्र समूहों के औसत परीक्षा प्रतिशत की तुलना एक स्वतंत्र नमूना टी-टेस्ट का उपयोग करके की गई थी। परीक्षण का उपयोग निम्न एस. ई. एस. और मध्यम/उच्च एस. ई. एस. के छात्रों के बीच देखे गए शैक्षणिक प्रदर्शन अंतर के सांख्यिकीय महत्व का आकलन करने के लिए किया गया था।

स्वतंत नमूना टी परिक्षण तालिका

सामाजिक आर्थिक स्थिति	संख्या	माध्य	मा विचलन	टी	डीऍफ़	2 टेल
उच्च	20	52.40	8.10	6.61	38	.001
निम्न	20	68.60	7.50			

आरेख़ - स्वतंत नमूना टी परिक्षण

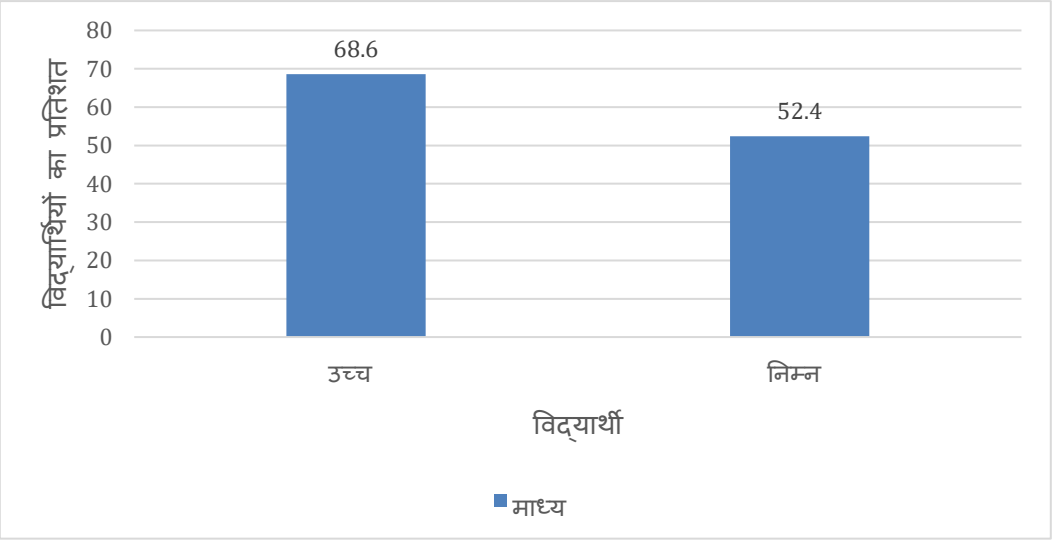

आंकड़ों का विश्लेषण:

स्वतंत्र नमूना टी -परीक्षण की तालिका में निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर तथा मध्यम एवं उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर से संबंधित विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन की तुलना प्रस्तुत की गई है। दोनों समूहों में 20-20 विद्यार्थी शामिल थे। परिणामों के अनुसार में निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों का औसत परीक्षा प्रतिशत 52.40% था, जबकि मध्यम एवं उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर वाले समूह का औसत परीक्षा प्रतिशत 68.60% पाया गया। इस प्रकार, दोनों समूहों के औसत अंकों में 16.20 प्रतिशत अंकों का अंतर दिखाई देता है। यह अंतर दर्शाता है कि अध्ययन में शामिल मध्यम एवं उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों का औसत शैक्षणिक प्रदर्शन निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों की तुलना में अधिक था। निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले समूह का मानक विचलन 8.10 था, जबकि मध्यम एवं उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर वाले समूह का मानक विचलन 7.50 था। इससे यह संकेत मिलता है कि दोनों समूहों के विद्यार्थियों के परीक्षा परिणामों में कुछ व्यक्तिगत भिन्नताएँ थीं, लेकिन दोनों समूहों में प्रदर्शन का प्रसार अपेक्षाकृत सीमित था। इस औसत अंतर की सांख्यिकीय महत्ता की जाँच के लिए स्वतंत्र नमूना टी -परीक्षण किया गया। प्राप्त परिणामों में टी = 6.61 तथा मध्य विचलन = 38 पाया गया और पी वैल्य = .001 दर्ज की गई। चूँकि पी वैल्यू .05 के पारंपरिक significance level से काफी कम है, इसलिए दोनों सामाजिक आर्थिक स्तर समूहों के बीच पाए गए औसत अंतर को सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण माना जाता है। दूसरे शब्दों में, केवल संयोग या नमूना के कारण इतना बड़ा अंतर प्राप्त होने की संभावना बहुत कम है। यहाँ यह ध्यान देना आवश्यक है कि तालिका में टी स्कोर सकारात्मक है क्योंकि मध्यम एवं उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर वाले समूह का औसत निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले समूह से अधिक है। अतः उपलब्ध आँकड़े यह संकेत देते हैं कि अध्ययन में विद्यार्थियों की घरेली सामाजिक आर्थिक और शैक्षिक उपलब्धि के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर देखा गया। यह निष्कर्ष केवल अध्ययन में शामिल 40 विद्यार्थियों के संदर्भ में समझा जाना चाहिए और इसे पूरे बिलासपुर जिले के सभी विद्यार्थियों पर सीधे सामान्यीकृत करते समय सावधानी बरतनी चाहिए।

निष्कर्ष :

स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण के परिणामों के आधार पर अध्ययन की प्रस्तावित परिकल्पना के संबंध में महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त हुआ। अध्ययन में निम्नआर्थिक सामाजिक स्तर विद्यार्थियों का औसत परीक्षा प्रतिशत 52.40%, जबकि उच्च आर्थिक सामाजिक स्तर विद्यार्थियों का औसत परीक्षा प्रतिशत 68.60% था। दोनों समूहों के बीच 16.20 प्रतिशत अंकों का अंतर पाया गया। टी -परीक्षण द्वारा प्राप्त t = 6.61, df = 38, p = .001 के परिणाम से स्पष्ट होता है कि यह अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है। चूँकि p-value .05 से कम है, इसलिए शून्य परिकल्पना (H_0), जिसमें दोनों समूहों के औसत परीक्षा प्रतिशत में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होने की बात कही गई थी, को अस्वीकार किया जाता है। इसके स्थान पर वैकल्पिक परिकल्पना (H_1) को समर्थन मिलता है, जिसके अनुसार मध्यम एवं उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर विद्यार्थियों का औसत परीक्षा प्रदर्शन Low SES विद्यार्थियों की तुलना में अधिक है। अध्ययन के संदर्भ में यह परिणाम संकेत करता है कि विद्यार्थियों की घरेलू सामाजिक-आर्थिक स्थिति उनके शैक्षणिक प्रदर्शन से महत्वपूर्ण रूप से संबंधित हो सकती है। मध्यम एवं उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर परिवारों के विद्यार्थियों को अध्ययन के लिए बेहतर शैक्षिक संसाधन, सीखने की सुविधाएँ, अध्ययन सामग्री, डिजिटल साधनों तक पहुँच तथा अन्य शैक्षिक अवसर अपेक्षाकृत अधिक प्राप्त हो सकते हैं; हालांकि, वर्तमान अध्ययन ने इन संभावित कारणों को अलग-अलग मापकर कारणात्मक रूप से स्थापित नहीं किया है। इसलिए परिणाम को संबंध/समूह-अंतर के रूप में प्रस्तुत करना अधिक उपयुक्त होगा, न कि यह कहना कि SES निश्चित रूप से शैक्षणिक प्रदर्शन का कारण है। कुल मिलाकर, चयनित नमूने में मध्यम एवं उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर विद्यार्थियों का प्रदर्शन निम्नआर्थिक सामाजिक स्तर के विद्यार्थियों की तुलना में सांख्यिकीय रूप से अधिक पाया गया। यह निष्कर्ष इस बात की ओर संकेत करता है कि विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि को शैक्षणिक उपलब्धि के अध्ययन में एक महत्वपूर्ण संदर्भीय चर के रूप में ध्यान में रखा जाना चाहिए। साथ ही, भविष्य के अध्ययनों में बड़े नमूने तथा परिवार की आय, अभिभावकीय शिक्षा, अध्ययन सुविधाएँ और विद्यालयीय संसाधन जैसे अन्य कारकों को शामिल करके इस संबंध को अधिक व्यापक रूप से समझा जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

- बॉर्डियू पी. (1986) पूँजी की श्रेणियाँ जे. जी. रिचर्डसन, शिक्षा के समाजशास्त्र के लिए सिद्धांत और अनुसंधान की पुस्तिका 241-258 ग्रीनवुड प्रेस।
- जे. एस. कोलमैन (1988) मानव पूंजी के गठन में सामाजिक पूंजी अमेरिकन जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी, 94 पूरक S95-S120. https://doi.org/10.1086/228943
- ड्रेज़ जे. और सेन ए. (2013) भारतः एक अनिश्चित गौरवः भारत और इसके विरोधाभास, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।
- छत्तीसगढ़ की सरकार, (2022) राज्य विद्यालय शिक्षा पर सर्वेक्षण की रिपोर्ट, विद्यालय शिक्षा विभाग रायपुर, छत्तीसगढ़
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार भारत (2020) राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 नई दिल्लीः प्रकाशन प्रभाग, शिक्षा मंत्रालय।
- शर्मा आर पटेल के (2021) मध्य भारत में ग्रामीण शिक्षा के सामाजिक-आर्थिक निर्धारक, विकास अध्ययन और ग्रामीण समाजशास्त्र जर्नल, 14 (2) 112-128.
- सिंह ए वर्मा. एम. (2019) घरेलू आय, माता-पिता की शिक्षा और अकादमिक उपलब्धिः ग्रामीण मध्य भारत में हाई स्कूल के छात्रों का एक अनुभवजन्य अध्ययन इंडियन जर्नल ऑफ सोशल वर्क, 80 (3) 315-332.